शोध मंथन Vol. XIII No.II Apr.-June 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कौशल विकास के अवसर

प्राप्तिः 01.06.2022
स्वीकृतः 15.06.2022

53

आकाश दीप
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ
ईमेलः *deepakash214@gmail.com*

डॉ० सीमा पंवार
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए सन्दर्भित है, जो मुख्यतः शिक्षा नीति 2020 की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारत केन्द्रित शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना की गई है जो इसकी परम्परा, संस्कृति, मूल्यों और लोकाचार में परिवर्तन लाने में अपना बहुमूल्य योगदान देने को तत्पर है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक व्यक्ति को बढ़ने और विकसित होने के लिए एक सामान अवसर प्रदान करना है तथा विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल विकास, बुद्धि और आत्मविश्वास का सृजन कर उनके दृष्टिकोण का विकास करना है। शोध पत्र में नई शिक्षा नीति 2020 की मूक विशेषताओं को दर्शाया गया है तथा इस शोध पत्र के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में आने वाली चुनौतियों का समाधान करने हेतु सुझावों को प्रस्तुत किया गया है जो भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए अति महत्वपूर्ण हैं।

मुख्य बिन्दु

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, प्रमुख सिद्धान्त, कौशल विकास, समावेशी शिक्षा, चुनौतियाँ।

प्रस्तावना

इन्सानों में हमेशा से जानने की प्रवृत्ति रही है न केवल बाह्य भौतिक परिवेश को बल्कि आंतरिक परिवेश को भी और संभवतः इंसानों की यही जानने की प्रवृत्ति ने शिक्षा व्यवस्था को जन्म दिया ताकि इंसान एक अनुशासनात्मक तरीके से चीजों को जान सके, खुद को समझ सके।

अगर एक नवजात शिशु की कल्पना करें तो, उसे न तो समाज का ज्ञान होता है न ही संसार का, न तो उसे अपने दोस्त की समझ होती है और न ही अपने दुश्मन की, उसे अपनी परम्परा, रीति–रिवाज आदि किसी का भी ज्ञान नहीं होता है। यहाँ तक कि उसे यह भी नहीं पता होता कि वह किस धर्म में पैदा हुआ है पर जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है वह अपने आसपास के वातावरण के प्रति जिज्ञासु होने लगता है। उसके मन में सवाल आने शुरू हो जाते हैं और फिर उसकी चेतना, उसका व्यवहार और उसका व्यकितत्व किसी साँचे में ढलने लग जाता है। एक निर्बोध शिशु को सही और गलत का ज्ञान कराने एवं जीवन के कर्त्तव्यपथ पर चलने के लिए उसे शिक्षा का ज्ञान कराया जाता है। यही शिक्षा उसके भविष्य का निर्धारण करती है। ''शिक्षा संस्कृति भाषा की ''शिक्ष्'' धातु

से बना शब्द है जिसका अर्थ है सीखना और सिखाना। इस तरह से शिक्षा का तात्पर्य सीखने–सिखाने की क्रिया से है। इसी सीखने–सिखाने की क्रिया से व्यक्ति में अन्तर्निहित क्षमता को उभार कर उसे आवश्यक ज्ञान उपलब्ध कराया जाता है और उसके व्यक्तित्व एवं कौशल को विकसित करने का प्रयास किया जाता है।''[1]

''शिक्षा को अंग्रेजी भाषा में Education कहा जाता है। Education शब्द लैटिन भाषा के “Educatum” शब्द भी लैटिन भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है E और Duco यहां E का अर्थ है– अन्दर से और क्नबव का अर्थ है– बाहर निकालना।''[2]

अरस्तू के अनुसार ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिस्क का निर्माण करने का कार्य शिक्षा करती है।''[3]

रूसों के शब्दों में ''असल शिक्षा वह है जो मनुष्य के अन्दर से उत्पन्न होती है। यह व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों की अभिव्यक्ति है।''[4]

जॉन डीवी के द्वारा ''शिक्षा मनुष्य की सभी क्षमताओं का विकास है जिनसे वह अपने पर्यावरण पर नियन्त्रण रख सके और अपनी संभावनाएँ पूरी कर सकें।''[5]

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ''व्यक्ति के आंतरिक पहलू की अभिव्यक्ति शिक्षा है।''[6]

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिये मूलभूत आवश्यकता है। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा हर बच्चे का मौलिक अधिकार है। देश के विकास में वहां के निवासियों की शिक्षा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिस देश में शिक्षा का स्तर मजबूत होगा, वह देश तेजी से प्रगति की दिशा में बंढ़ेगा। आज भी भारत एक विकासशील देश बना हुआ है। इसका सबसे बड़ा कारण है शिक्षा नीति पर ध्यान ना देना। 21वीं सदी के 20वें साल में भारत में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई है। भारत में सर्वप्रथम 1968 में शिक्षा नीति बनाई गई थी। उसके बाद 1986 में बनाई गई। जिसके बाद शिक्षा नीति को 1992 में संशोधित किया गया। यह नीति कमियों से भरी हुई थी, इसके बावजूद इस पर ध्यान न देना देश के विकास में बाधक बना हुआ था। लगभग 28 वर्ष बाद 2020 में पुनः राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के माध्यम से शिक्षा में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किये गये हैं, जिसमें शिक्षा सम्बन्धित बहुत से नियमों में बदलाव किया गया है। वहीं मानव संसाधन प्रबन्धन मंत्रालय ने शिक्षा नीति में बदलाव के साथ–साथ अपने मंत्रालय का नाम भी बदल दिया। मानव संसाधन मंत्रालय को अब शिक्षा मंत्रालय के नाम से जाना जाएगा। National Education Policy 2020 के तहत विद्यार्थियों के लिए व्यवसायिक विकास को जरूरी कर दिया गया है। नई शिक्षा नीति पुरानी शिक्षा नीति से बेहतर और अधिक प्रभावकारी प्रतीत होती है। नई शिक्षा नीति 5+3+3+4 संरचना पर आधारित है।

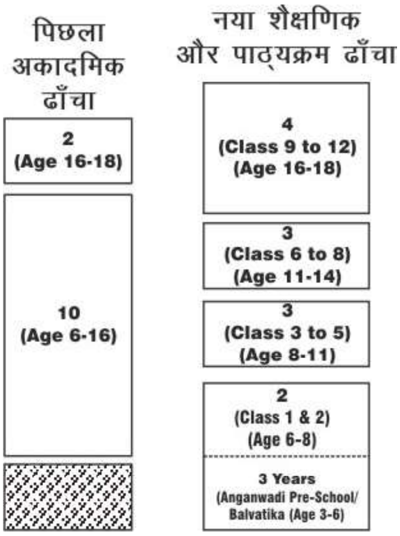
पिछला अकादमिक ढाँचा
नया शैक्षणिक और पाठ्यक्रम ढाँचा
2 (Age 16-18)
10 (Age 6-16)
4 (Class 9 to 12) (Age 16-18)
3 (Class 6 to 8) (Age 11-14)
3 (Class 3 to 5) (Age 8-11)
2 (Class 1 & 2) (Age 6-8)
3 Years (Anganwadi Pre-School/ Balvatika (Age 3-6)

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत सभी विद्यार्थियों के

लिए, चाहे उनका निवास स्थान कहीं भी हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध करानी होगी। इस कार्य में ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रह रहे समुदायों, वंचित और अल्प प्रतिनिधित्व वाले समूहों पर विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत होगी। शिक्षा बराबरी सुनिश्चित करने का बड़ा माध्यम है और इसके द्वारा समाज में समानता, समावेशन और सामाजिक आर्थिक रूप से गतिशीलता हासिल की जा सकती है। ऐसे समूहों के सभी बच्चों के लिए, परिस्थितिजन्य बाधाओं के बावजूद, हर संभव पहल की जानी चाहिए जिससे वे शिक्षा व्यवस्था में प्रवेश भी पा सकें और उत्कृष्ट प्रदर्शन भी कर सकें।

कौशल विकास का अर्थ

मानव को अपने जीवन में सभी प्रकार से उन्नत रहने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है और श्रम करने के पीछे सिर्फ एक ही मूल कारण होता है वह है स्वयं में परिवर्तन। यह प्रत्येक युवा के लिए तो इतना जरूरी होता है जैसे किसी हंस के लिए पानी।

Skill का हिन्दी में अर्थ होता है कौशल और Development का अर्थ विकास होता है। अपने गुणों और कुशलताओं के श्रम के द्वारा किये जाने वाले विकास को ''कौशल विकास'' कहते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सरकार द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाई गई। जिसे सभी के परामर्श से तैयार किया गया है। इसे लाने के साथ ही देश में शिक्षा पर व्यापक चर्चा आरम्भ हो गई है। शिक्षा के सम्बन्ध में गांधी जी का तात्पर्य ''बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।''[7] इसी प्रकार ''स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि ''मनुष्य की अर्न्तनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है''[8] इन्हीं सब चर्चाओं के मध्य से हम देखते हैं कि 1986 की शिक्षा नीति में ऐसी क्या कमियाँ रह गई थी जिन्हें 1992 में संशोधन के द्वारा भी कमियों को दूर नहीं किया जा सका। जिन्हें दूर करने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लाने की आवश्यकता पड़ी। साथ ही क्या यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति उन उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम होगी जिसका स्वप्न महात्मा गांधी और स्वामीविवेकानन्द ने देखा था।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को 29 जुलाई 2020 को लागू किया गया है जिसे कि 34 वर्षो के बाद लाया गया है। समय के साथ–साथ शिक्षा नीति में परिवर्तन भी आवश्यक होता हैं ताकि देश की तेजी से उन्नति हो सके पुरानी शिक्षा नीति में बदलाव कर आने वाली पीढ़ियों को मानसिक और बौद्धिक स्तर पर और अधिक प्रबल करना है। जिससे कि हमारा देश तेजी से तरक्की कर सके। यह स्वतन्त्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। इससे पहले 1968 में इंदिरा गांधी के द्वारा, 1986 में राजीव गांधी के द्वारा नई शिक्षा नीति लागू की गई थी इस नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के जीवन को सशक्त बनाना है। इसमें विद्यार्थी अपने विषय सूची के अनुरूप शिक्षण प्राप्त कर सकता है। पुरानी शिक्षा नीति वर्तमान में उतनी प्रभावी नहीं थी। जिसका मूल आधार विद्यार्थियों को सिखाना था ना की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, जो कि वर्तमान समय के अनुरूप नहीं था। जिस कारण से नई शिक्षा नीति को लागू करना अत्यंत ही आवश्यक हो गया था क्योंकि पूरा विश्व तेजी से शिक्षा में सुधार करके अधिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देकर तेजी से विकसित हो रहा है इसलिए हमें भी जरूरत थी कि हम भी नई शिक्षा नीति लागू करे विद्यार्थी युवाओं को शिक्षित करके देश के विकास में भागीदार बनाए। नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य सबको समान शिक्षा का अवसर प्रदान करना है। अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा मिल सके ताकि देश ओर तेजी से विकास कर सके।

विशेष तथ्य

- "अन्तिम राष्ट्रीय नीति 1986 में बनाई गई थी जिसमें वर्ष 1992 में संशोधन किया गया था।
- वर्तमान नई शिक्षा नीति अन्तरिक्ष वैज्ञानिक के० कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है।
- नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत वर्ष 2030 तक एकल नामांकन अनुपात (Gross Enrolment Ratio-GER) को 100 प्रतिशत लाने का लक्ष्य रखा गया है।
- नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत केन्द्र व राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा पर जीडीपी के 6 प्रतिशत हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है।
- नई शिक्षा नीति की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन प्रबन्धन मन्त्रालय का नाम परिवर्तित कर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया।"[9]

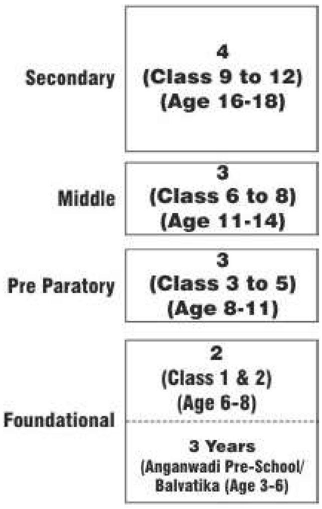
Secondary
4
(Class 9 to 12)
(Age 16-18)
Middle
3
(Class 6 to 8)
(Age 11-14)
Pre Paratory
3
(Class 3 to 5)
(Age 8-11)
Foundational
2
(Class 1 & 2)
(Age 6-8)
3 Years
(Anganwadi Pre-School/
Balvatika (Age 3-6)

New Pedagogical & Curricular Structure

उच्च शिक्षा में कौशल विकास के लाभ

किसी भी राष्ट्र के विकास में शिक्षा के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा राष्ट्र के विकास की नींव तैयार करती है। भारत देश की एक विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को स्वायत्तता देने की सकारात्मक पहल की है। अनुशासित विकास के लिए स्वायत्तता की नितांत आवश्यकता है। शिक्षा को हम जितना स्वायत्त बनायेंगे शिक्षा की गुणवत्ता में उतनी ज्यादा बढ़ोत्तरी होगी।

21वीं सदी की आवश्यकताओं को देखते हुए, गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा का जरूरी उद्देश्य, अच्छे चिन्तनशील, बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनात्मक व्यक्तियों का विकास होना चाहिए। यह एक व्यक्ति को एक या एक से अधिक विशिष्ट क्षेत्रों में गहन स्तर पर अध्ययन करने में सक्षम बनाती है। उच्चतर शिक्षा मनुष्य और साथ ही सामाजिक कल्याण के विकास में अति आवश्यक भूमिका निभाती है।

एक राष्ट्र के आर्थिक विकास और आजीविकाओं को स्थायित्व देने में भी उच्चतर शिक्षा एक महतवपूर्ण योगदान देती है।

शिक्षा नीति में देश भर के उच्च शिक्षा संस्थानों के लिये एक एकल नियामक अर्थात् भारतीय उच्च शिक्षा आयोग (Higher Education Commission of India) की परिकल्पना की गई है जिसमें विभिन्न भूमिकाओं को पूरा करने हेतु नए कार्यक्षेत्र होंगे। भारतीय उच्च शिक्षा आयोग चिकित्सा एवं कानूनी शिक्षा को छोड़कर पूरे उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिए एक एकल निकाय के रूप में कार्य करेगा।

कामकाजी आबादी की माँग

दुनिया के ज्यादातर विकसित देशों में कामकाजी आबादी कम हो रही है। इस कारण से इन देशों में भारत के कौशल प्रशिक्षित युवाओं की मांग बढ़ रही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि केन्द्र सरकार कौशल विकास के उन्नयन पर निरन्तर ध्यान दे रही है। भारत सरकार ने कौशल विकास को नई शिक्षा नीति 2020 से जोड़कर महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

युवा इनोवेटर

''यूनाईटेड नेशंस पापुलेशन फण्डस ने अपनी 108 अरब नौजवानों की ताकत नामक रिपोर्ट जारी करते हुए कहा था कि युवा इनोवेटर, बिल्डर और लीडर होते हैं लेकिन ऐसा वे तभी कर सकते हैं जब उनके पास कौशल, अवसर, स्वास्थ्य व निर्णय लेने की क्षमता हो। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस चिन्ता को ध्यान में रखते हुए कौशल विकास को उच्च शिक्षा नीति के साथ तैयार किया है। जिसके द्वारा युवा कुछ नया सीख सकेंगे जो उनके लिए बहुत लाभदायक होगा।''[10]

सार्थक योजना

सार्थक योजना को सभी पक्षकार के लिए तैयार किया गया है। सार्थक योजना सबसे अधिक कौशल विकास के लिए आवश्यक है जिसके द्वारा युवा अपनी इच्छा और लगन से कुछ नया सीख सकेंगे। उनके स्वप्न को सार्थक योजना गति प्रदान करेगी। सार्थक योजना में एनईपी में शिक्षा नीति की सिफारिशों के 297 कार्यों को एक साथ जोड़ा गया है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्य बिन्दु

- भारत की अत्याधुनिक क्षेत्रों में पेशेवरों को तैयार करने में भी अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए जैसे– मशीन लर्निंग, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि जो युवाओं की रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए स्नातक शिक्षा में बनी जाएगी।

- तकनीकी शिक्षा का लक्ष्य बहु–विषयक शिक्षण संस्थानों और कार्यक्रमों के भीतर पेश किया जाना है और अन्य विषय के साथ गहराई से जुड़ने के अवसरों पर नए सिरे से ध्यान केन्द्रित करना है।

- कानूनी शिक्षा को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने की आवश्यकता है। सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाते हुए और न्याय तक व्यापक पहुँच के लिए नई तकनीकों को अपनाते हुए।

- ऐसे कदम के लिए तैयार संस्था को उपयुक्त ग्रेडेड मान्यता प्राप्त होने पर, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स (BOG) स्थापित किया जायेगा। नीति के अनुसार, सदस्यों का चयन करते समय इक्विटी के विचारों का भी ध्यान रखा जाएगा।

- सभी शिक्षा संस्थानों की ऑडिट और प्रकटीकरण के समान मानकों के लिए आयोजित किया जाएगा लाभ के लिए नहीं। एनईपी–2020 के अनुसार, यदि कोई हो, तो सरप्लस क्षेत्र में पुनर्निवेश किया जाएगा।

- नेशनल एजुकेशन पॉलिसी को लागू करने के लिए जीडीपी का 6 प्रतिशत हिस्सा खर्च किया जाएगा।
- पढ़ाई में संस्कृत और भारत की अन्य प्राचीन भाषाएँ पढ़ने का विकल्प रखा जाएगा। छात्र अगर चाहे तो यह भाषाएँ पढ़ सकते हैं।
- उच्च शिक्षा में एम0फिल0 की डिग्री की बन्द किया गया है।
- छात्रों को 3 भाषा सिखाई जाएगी जो कि राज्य अपने स्तर पर निर्धारित करेंगे।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा तैयार की जाएगी।
- एनईपी–2020 के अन्तर्गत बच्चों की पढ़ाई के साथ–साथ उनके कौशल विकास पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।
- नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत यदि कोई छात्र कोई कोर्स बीच में छोड़कर दूसरे कोर्स में प्रवेश लेना चाहता है तो वह पहले कोर्स से निश्चित समय तक ब्रेक ले सकता है और दूसरे कोर्स में प्रवेश कर सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में कौशल विकास सम्बन्धी प्रावधान

नई शिक्षा नीति में देश भर के उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए एक एकल नियामक अर्थात् भारतीय उच्च शिक्षा परिषद् की परिकल्पना की गई है जिसमें विभिन्न भूमिकाओं को पूरा करने हेतु कई कार्यक्षेत्र होंगे। जिसमें सबसे महत्वपूर्ण कौशल विकास है।

जीवन में शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए वर्तमान सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में नए बदलावों के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को स्वीकृति दे दी। इस शिक्षा नीति को प्रस्तुत करते हुए शिक्षा मंत्री डॉ0 रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा ''देश के प्रधानमंत्री ने एक नए भारत के निर्माण की बात की है जो स्वच्छ भारत होगा, स्वस्थ भारत होगा, समृद्ध भारत होगा, श्रेष्ठ भारत होगा। उस नए भारत के निर्माण में यह नई शिक्षा नीति 2020 मील का पत्थर साबित होगी।''[11]

''यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ज्ञान–विज्ञान, अनुसंधान नवाचार, प्रौद्योगिकी से युक्त संस्कारक्षम, मूल्यपरक, हर क्षेत्र में, हर परिस्थिति में मुकाबला करने वाली, पूरी दुनिया के लिए, भारत में ज्ञान की महाशक्ति के रूप में उभर कर आएगी। शिक्षा नीति किसी भी राष्ट्र की मूलभूत आवश्यकता होती है। जिसमें अतीत का विश्लेषण, वर्तमान की आवश्यकता तथा भविष्य की संभावनाएँ निहित होती हैं।

नई शिक्षा नीति 2020, का मुख्य उद्देश्य भाषा दक्षता, कौशल विकास, वैज्ञानिक स्वभाव, नैतिक तर्क, डिजिटल साक्षरता, भारत बोध और चेतना का विकास करना है।

शिक्षा मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधन है। शिक्षा प्रक्रिया के दौरान प्राप्त ज्ञान तथा कौशल विकास के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान करता है। अपने सामाजिक और भौतिक पर्यावरण को उन्नत बनाता है।

- ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत उच्च शिक्षण संस्थाओं में सकल नामांकन अनुपात को 26.3 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा गया है इसके साथ ही देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में 3.5 करोड़ नई सीटों को जोड़ा जाएगा।

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत स्नातक पाठ्यक्रम में मल्टीपल एंट्री एंड एक्जिट व्यवस्था की अपनाया गया है। इसके तहत 3 या 4 वर्ष के स्नातक कार्यक्रम में छात्र कई स्तरों पर पाठ्यक्रम को छोड़ सकेंगे और उन्हें उसी के अनुरूप डिग्री या प्रमाण–पत्र प्रदान किया जाएगा।
- विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों से प्राप्त अंकों या क्रेडिट को डिजिटल रूप से सुरक्षित रखने के लिए एक ''एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट'' दिया जाएगा, ताकि अलग–अलग संस्थानों में छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर उन्हें डिग्री प्रदान की जा सके।
- नई शिक्षा नीति के तहत एम, फिल. कार्यक्रम को समाप्त कर दिया गया।''[12]

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों में चुनौतियाँ

देश में पहली बार शिक्षा नीति 1968 में लाई गई थी। उसे बाद 1986 में बनाई गई जिसके बाद नई शिक्षा नीति को 1992 में संशोधन किया गया। लगभग 34 साल बाद 2020 में पुनः नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लेकर अहम् बदलाव किए गए हैं। जिसमें शिक्षा सम्बन्धित बहुत से नियमों में बदलाव किए गए हैं।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 2030 तक सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) को मौजूदा 26.3 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत करने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की कल्पना की गई है। इसके अलावा, विषयों में पाठ्यक्रम और कार्यक्रम जैसे कि भारतीय भाषाएँ, योग, कला, संगीत, इतिहास, विज्ञान आदि एवं उससे आगे के स्तर पर प्रासंगिक पाठ्यक्रम, सार्थक अवसर वैश्विक गुणवत्ता मानकों के इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सामाजिक जुड़ाव, गुणवत्ता, राजनीतिक और परिसर में समर्थन आदि को बढ़ावा देने के लिए उच्च शिक्षा के समक्ष निम्न चुनौतियाँ हैं–

नामांकन

- उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण रिपोर्ट 2019–20 के अनुसार ''भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सकल नामांकन अनुपात (GER) मात्र 26.3 प्रतिशत है जो विकसित देशों के साथ ही अन्य विकासशील देशों की तुलना में बहुत कम है।''[13]
- विद्यालय स्तर पर नामांकन में वृद्धि के साथ उच्च शिक्षा संस्थानों की आपूर्ति देश में शिक्षा की बढ़ी माँग को पूरा करने में अपर्याप्त है।

गुणवत्ता

- उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करना वर्तमान में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।
- भारत में बड़ी संख्या में कॉलेज और विश्वविद्यालय यूजीसी यानि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित न्यूनतम शर्तों को पूरा करने में असमर्थ है।

राजनीतिक हस्तक्षेप

- उच्च शिक्षा के प्रबन्धन में राजनेताओं का बढ़ता दखल उच्च शिक्षा संस्थानों की स्वायत्तता को खतरे में डालता है।
- इसके अलावा, विभिन्न अभियानों में संलग्न छात्र शिक्षा सम्बन्धी अपने उद्देश्यों को भूल जाते हैं और राजनीति में अपना कैरियर विकसित करना शुरू कर देते हैं।

आधारभूत संरचना

- शिक्षकों की कमी और योग्य शिक्षकों को आकर्शित करने तथा उन्हें बनाए रखने की प्रक्रिया में राज्य शिक्षा के मार्ग में चुनौतियाँ खड़ी की हैं।
- उच्च शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक रिक्तियों के बावजूद बड़ी संख्या में नेट/पीएचडी उम्मीदवार बेरोजगार बने हुए हैं।
- भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए बुनियादी ढाँचा एक और चुनौती है, विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा संचालित संस्थानों में अवसंरचना तथा भौतिक सुविधाओं की स्थिति अच्छी नहीं है।

अपर्याप्त शोध

- उच्च शिक्षा संस्थानों में शोध/अनुसंधान पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा।
- संसाधनों एवं सुविधाओं की कमी है और छात्रों के मार्गदर्शन हेतु सक्षम शिक्षकों की संख्या भी सीमित है।
- अधिकांश शोधार्थी फैलोशिप से वंचित है या उन्हें समय पर फैलोशिप प्रदान नहीं की जा रही है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनके शोध को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त संस्थानों का समन्वय कमजोर है।

कमजोर शासन संरचना

- भारतीय शिक्षा प्रबंधन अति–केन्द्रीकरण, नौकरशाही संरचनाओं और उत्तरदायित्व, पारदर्शिता एवं व्यावसायिकता की चुनौतियों का सामना कर रहा है।

सुझाव

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय परम्पराओं और मूल्यों को जगह मिले। इसका उद्देश्य ऐसी समतावादी और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रणाली बनाना है जिससे एक ज्ञान आधारित समाज का निर्माण हो। इसमें प्राचीन ज्ञान से लेकर आधुनिक ज्ञान को शामिल किया गया है। इस नीति में सभी विद्यार्थियों को चाहे उनका निवास स्थान कहीं भी हो उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करनी होगी।

- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विकास के लिए उत्कृष्ट स्तर के शोध का विकास करना।
- शिक्षकों एवं संकाय को सीखने का केन्द्र मानते हुए इनकी भर्ती आदि हेतु उन्नत सुविधाओं का विकास करना।
- विद्यालय से महाविद्यालय शिक्षा तक सभी स्तरों के पाठ्यक्रमों में तालमेल एवं सामंजस्य बिठाना।
- सभी शैक्षणिक निर्णयों में पूर्ण क्षमता और समावेशन को ध्यान में रखें।
- विविधता और स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए शिक्षा देना।
- शिक्षा को सरल एवं सुलभ बनाने के लिए तकनीक पर जोर देना।
- सीखने के लिए सतत् मूल्यांकन पर जोर देना न कि परीक्षा को महत्त्व देना ताकि कोचिंग संस्कृति का विनाश हो सके।

- जीवन कौशल अर्थात् आपसी संवाद, सहयोग, सामूहिक कार्यों को बढ़ावा देना।
- नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्यों का विकास करना।
- बहुभाषा शिक्षा प्रणाली अपनाना ताकि अध्ययन–अध्यापन कार्य में भाषा की शक्ति को पहचान मिल सके।
- रचनात्मक एवं तार्किक सोच का विकास करना ताकि नवाचारों को प्रोत्साहन मिले।
- अवधारणात्मक सोच का विकास करना न कि रटने एवं परीक्षा की पढ़ाई पर जोर देना।
- शिक्षा में लचीलापन लाना ताकि शिक्षार्थियों में उनके सीखने के अनुसार पाठ्यक्रम चुनने की आजादी हो।
- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना।
- शिक्षा को सार्वजनिक सेवा मानते हुए इसे प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार माना जाए।
- देश की प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति, ज्ञान एवं परम्पराओं का समावेश करना।

निष्कर्ष

शिक्षा मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा प्रक्रिया के दौरान प्राप्त ज्ञान तथा कौशल विकास के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान करता है।

शिक्षा नीति किसी भी राष्ट्र की मूलभूत आवश्यकता होती है। जिसमें अतीत का विश्लेषण, वर्तमान की आवश्यकता तथा भविष्य की नीतियाँ निहित होती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित होने के साथ–साथ, भारतीय परम्पराओं, भारतीय संस्कृति एवं भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन एवं प्रसार पर जोर देती है जिससे यह भारत को एक समर्थ, गौरवशाली, आत्मनिर्भर और कौशल विकास के अवसर प्रदान करने में निश्चित ही प्रमुख भूमिका निभाएगी।

सफदर हाशी का यह मशहूर गीत न केवल जीवन में शिक्षा की आवश्यकता बल्कि उसके महत्त्व को भी रेखांकित करता है–

''पढ़ो, लिखा है दीवारों पर मेहनतकश का नारा
पढ़ो, पोस्टर क्या कहता है, वो भी दोस्त तुम्हारा
पढ़ो, अगर अन्ध विश्वासों से पाना है छुटकारा
पढ़ो, किताबें कहती हैं सारा संसार तुम्हारा।।''[14]

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा रटने वाले विषयों, समय सीमा को पूरा करने और अंक प्राप्त करने से कहीं अधिक है, लेकिन शिक्षा का वास्तविक अर्थ– ज्ञान, कौशल, मूल्यों को प्राप्त करना और उस क्षेत्र में निरन्तर कार्य करना और प्रगति करना है, जिससे व्यक्ति अपनी रूचि की खोज करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अगर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सही तरीके से लागू किया जाए तो यह भारतीय शिक्षा को नई ऊँचाइयों पर ले जा सकती है। हालाँकि इसमें कुछ उद्देश्यों में लक्ष्यों की स्पष्टता का अभाव है, आखिरकार, यह छात्रों के समग्र विकास और प्रगति को ध्यान में रखते हुए लाई गयी है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कई उपक्रमों के साथ रखी गई है जो वास्तव में वर्तमान परिदृश्य की जरूरत है। नीति का सम्बन्ध अध्ययन पाठ्यक्रम के साथ कौशल विकास पर ध्यान देना है।

किसी भी चीज के सपने देखने से वह काम नहीं करेगा, क्योंकि उचित योजना और उसके अनुसार काम करने से केवल उद्देश्य पूरा करने में मदद मिलेगी। जितनी जल्दी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्य प्राप्त होंगे, उतनी ही जल्दी हमारा राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर होगा।

संदर्भ

1. (2020). नई शिक्षा नीति 25 अगस्त. पृष्ठ 17. www.drishtiias.com.
2. (2020). दृष्टि, दा विज़न. (चर्चित मुद्दे). नई शिक्षा नीति. पृष्ठ 42.
3. https://aajtak.intoday.in.
4. कुमार, कुन्दन. (2020). करेंट अफेयर्स वार्षिकांक. स्पीडि पब्लिकेशनः पटना. पृष्ठ 26.
5. परिहार, प्रेम. (2020). 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति. संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ. शोध–पत्र. पृष्ठ 1.
6. (2020). नई शिक्षा नीति. पृष्ठ 15. www.bbc.com.
7. https://rasht riyashiksha.com.
8. (2020). नई शिक्षा नीति. पृष्ठ 14. www.bbc.com.
9. (2020). दृष्टि, दा विज़न. (राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः महत्त्व एवं चुनौतियाँ). 31 जुलाई. पृष्ठ 52. www.drishtiias.com.
10. शर्मा, प्रो० के०एल०. (2020). दैनिक भास्कर जयपुर. जयपुर संस्करण. 24 अगस्त. पृष्ठ 2.
11. https://www.jagranjosh.com.
12. गंगवाल, सुभाष. (2020). नई शिक्षा नीति, 21वीं सदी की चुनौतियों का करेगी मुकाबला. दैनिक नव ज्योति. 22 अगस्त. पृष्ठ 4.
13. सिंह, दुर्गेश. (2020). क्रॉनिकल मासिक पत्रिका. मई. पृष्ठ 80–81.
14. गंगवाल, सुभाष. (2020). नई शिक्षा नीति, 21वीं सदी की चुनौतियों का करेगी मुकाबला. दैनिक नव ज्योति. 22 अगस्त. पृष्ठ 4.